पु॰ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

CLASS-X
HINDI
REMAINING SYLLABUS
2020-21

Chapters:-

Chp-8-kaartoos

Gr-Ras

- **Vaky**
- **Shabd-pad**
- **Padbandh**

गद्य भाग

कारतूस

अंग्रेज इस देश में व्यापारी का भेष धारण कर के आये थे। किसी को कोई शक न हो इसलिए वे शुरूशुरू में - व्यापार ही कर रहे थे, परन्तु उनका इरादा केवल व्यापार करने का नहीं था। व्यापार के लिए उन्होंने जिस ईस्ट-इंडिया कंपनी की स्थापना की थी, उस कंपनी ने धीरेधीरे देश की रियासतों पर अपना अधिकार स्थापित करना - शुरू कर दिया। उनके इरादों का जैसे ही देशवासियों को अंदाजा हुआ उन्होंनेअंग्रेजों को बाहर निकालने के प्रयास शुरू कर दिए।

प्रस्तुत पाठ में एक ऐसे अपनी जान पर खेल जाने वाले शूरवीर के कारनामों का वर्णन किया गया है, जिसका केवल एक ही लक्ष्य था अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने चार व्यक्तियों का वर्णन - किया है, वे हैं कर्नल -, लेफ़्टीनेंट, सिपाही और सवार।कर्नल और लेफ्टिनेंट आपस में वज़ीर अली के कारनामों की बात करते हुए कहते है कि वज़ीर अली ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा है और उसको देख कर उन्हें रॉबिनहुड की याद आ जाती है। फिर कर्नल लेफ्टिनेंट को सआदत अली यानि वज़ीर अली के चाचा के बारे में बताता है की किस तरह वो वज़ीर अली के पैदा होने से दुखी था और अंग्रेजो का मित्र बन गया था। अवध के सिंहासन पर बने रहने के लिए उसने अंग्रेजो को अपनी आधी दौलत और दस लाख रूपए दिए थे। लेफ्टिनेंट को जब पता चलता है की हिंदुस्तान के बहुत से राजा, बादशाह और नवाब अफगानिस्तान के नवाब को दिल्ली पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं तो लेफ्टिनेंट की बातों में हामी भरते हुए कर्नल कहता है, कि अगर ऐसा हुआ तो कंपनी ने जो कुछ हिन्दुस्तान में हासिल किया है वह सब कुछ गवाना पड़ेगा। कर्नल की बातों को सुन कर लेफ्टिनेंट कर्नल से कहता है कि वज़ीर अली की आजादी अंग्रेजों के लिए खतरा है। इसलिए अंग्रेजों को किसी भी तरह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना ही चाहिए। कर्नल कहता है कि तभी तो वह अपनी पूरी फ़ौज को ले कर उसका पीछा कर रहा है और वज़ीर अली उनको सालों से धोखा दे रहा है। वज़ीर अली बहुत ही बहादुर आदमी है। वज़ीर अली ने कंपनी के एक वकील की हत्या भी की है। कर्नल ने हत्या की घटना का वर्णन करते हुए कहा कि वजीर अली को उसके पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने वजीर अली को बनारस भेज दिया था, कुछ महीनो के बाद गवर्नर जनरल वजीर अली को कलकत्ता में बुलाने लगा। वज़ीर अली (कोलकता) ने कंपनी के वकील से शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है। वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वज़ीरअली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ नफ़रत कूटकूटकर भरी हुई थी और वकील के इस तरह के व्यवहार ने वज़ीर अली को गुस्सा दिला दिया और - उसने चाकू से वहीँ वकील की हत्या कर दी।

कर्नल लेफ्टिनेंट को समझाता है कि वज़ीर अली किसी भी तरह नेपाल पहुँचना चाहता है। वहाँ पहुँच कर उसकी योजना है कि वह अफगानिस्तान का हिन्दुस्तान पर हमले का इंतजार करेगा, अपनी ताकत को बढ़ाएगा, सआदत अली को सिंहांसन से हटाकर खुद अवध पर कब्ज़ा करेगा और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से निकालेगा। अंग्रेजी फ़ौज और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बहुत सख्ती से वज़ीर अली का पीछा कर रहे हैं। अंग्रेजी

फ़ौज को पूरी जानकारी है कि वज़ीर अली जंगलों में कहीं छुपा हुआ है।
लेफ्टिनेंट कहता है कि घोड़े पर सवार आदमी सीधा अंग्रेजों के तम्बू की ओर आता मालूम हो रहा है। घोड़े के टापों की आवाज़ बहुत नजदीक आकर रुक जाती है। सिपाही अंदर आकर कर्नल से कहता है कि वह सवार उससे मिलना चाहता है। कर्नल सिपाही से उस सवार को अंदर लाने के लिए कहता है। कर्नल सवार से आने का कारण पूछता है। सवार कर्नल से कुछ कारतूस मांगता है और कहता है कि वह वज़ीर अली को गिरफ्तार करना चाहता है। यह सुन कर कर्नल सवार को दस कारतूस दे देता है और जब सवार से नाम पूछता है तो सवार अपना नाम वज़ीर अली बताता है और कहता है कि कर्नल ने उसे कारतूस दिए हैं इसलिए वह उसकी जान को बख्श रहा है। इतना कह कर वज़ीर अली बाहर चला जाता है, घोड़े के टापों की आवाजों से लगता है की वह दूर चला गया है। इतने में लेफ्टिनेंट अंदर आता है और कर्नल से पूछता है कि वह सवार कौन था । कर्नल अपने आप से कहता है कि वह एक ऐसा सिपाही था जो अपनी जान की परवाह नहीं करता और आज ये कर्नल ने खुद देख लिया था।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर)25-30 शब्दों में लिखिए -
प्रश्न-1-वज़ीर अली के अफ़साने सुन कर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी ?
उत्तर-कर्नल को वजीर अली की कहानियाँ सुन कर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाती थी। रॉबिनहुड की ही तरह वजीर अली के मन में भी अंग्रेजों के खिलाफ बहुत अधिक नफरत भरी पड़ी थी। वज़ीर अली भी रॉबिनहुड की ही तरह बहादुर था और अंग्रेजों को अपने देश से निकलना चाहता था।
प्रश्न-2-सआदत अली कौन था ? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा ?
उत्तर-सआदत अली -, वज़ीर अली का चाचा और आसिफ़उद्दौला का भाई था। वज़ीर अली के पैदा होने को सआदत अली ने अपनी मौत ही समझ लिया था क्योंकि वज़ीर अली के पैदा होने के बाद अब वह अवध के सिंहासन को हासिल नहीं कर सकता था।
प्रश्न-3-सआदत अली को अवध के तख़्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था ?
उत्तर-सआदत अली ंग्रेजों का दोस्त था और भोगविलास में रहना पसंद करता था| इसी कारण उसने अपनी आधी जायदाद और दौलत अंग्रेजों को दे दी और साथ ही दस लाख रुपये नगद भी दिए ताकि अंग्रेज उसको सिहांसन पर बना रहने दें। इस तरह अंग्रेजों का उसे तख्त पर बिठाने में लाभलाभ था।-ही-
प्रश्न-4-कंपनी के वकील का क़त्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफ़ाजत कैसे की ?
उत्तर-वज़ीर अली वकील की हत्या करने के बाद भाग गया था। वह अपने साथियों के साथ आज़मगढ़ की तरफ़ भाग गया। आज़मगढ़ के शासकों ने उन सभी को अपनी सुरक्षा देते हुए घागरा तक पहुँचा दिया। तब से वह वहाँ के जंगलों में ही रहने लगा।
प्रश्न-5-सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का बक्का रह गया-?
उत्तर- वज़ीर अली बहुत ही चतुराई और बहादुरी से कर्नल के तम्बू में सवार बन कर गया था और कर्नल को बेवकूफ बना कर दस कारतूस भी ले लिए थे। जाने के समय तक कर्नल को यह जानकारी नहीं थी कि वह

सवार असल में कौन है। जब जाते हुए सवार ने अपना नाम वज़ीर अली बताया तो कर्नल उसकी बहादुरी को देख कर हक्काबक्का रह गया।-

(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में- लिखिए

प्रश्न1-लेफ़्टिनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के ख़िलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहार दौड़ गई है ?

उत्तर ज़मा को -जब लेफ्टिनेंट ने कहा कि कहीं से खबर है कि वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे - हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रित कर रहा है। तो कर्नल ने कहा कि सबसे पहले अफ़गानिस्तान को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए टीपू सुल्तान ने आमंत्रित किया था और उसके बाद वज़ीर अली ने और फिर शमसुद्दौला ने भी अफ़गानिस्तान को हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए आमंत्रण दिया। ये सब जान कर लेफ़्टिनेंट को लगा कि कंपनी के ख़िलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहार दौड़ गई है।

प्रश्न-2-वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का क़त्ल क्यों किया ?

उत्तर वजीर अली को उसके नवाब के पद से हटाने के बाद अंग्रेजों ने - वजीर अली को बनारस भेज दिया था , कुछ महीनो के बाद गवर्नर जनरल वजीर अली को कलकत्ता बुलाने लगा। वज़ीर अली कंपनी के (कोलकता) वकील से शिकायतगवर्नर जनरल उसे कलकत्ता बुला रहा है। वकील ने वज़ीर अली की शिकायत पर कोई गौर नहीं किया और उल्टा वज़ीर अली को ही बुराभला कहने लगा। वज़ीर अली के दिल में तो पहले से ही अंग्रेजों - कूटकर भरी हुई थी और वकील के इस तरह के व्यवहार ने वज़ीर अली को-के खिलाफ नफ़रत कूटगुस्सा दिला दिया और उसने चाकू से वहीं वकील का क़त्ल कर दिया।

प्रश्न-3-सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किया ?

उत्तर वज़ीर अली सवार बन कर अकेले ही अंग्रेजों के तम्बू में गया और कर्नल को ऐसे दिखाया जैसे यह भी - वज़ीर अली के खिलाफ है। उसने कर्नल को कहा कीउसे वज़ीर अली को गिरफ़्तार करने के लिए कुछ कारतूस चाहिए। कर्नल को लगा की वह भी वज़ीर अली को पकड़ना चाहता है इसलिए कर्नल ने सवार को दस कारतूस दे दिए। इस तरह सवार ने कर्नल से कारतूस हासिल किए।

प्रश्न-4-वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था, कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वज़ीर अली को अंग्रेजों ने उनके नवाब पद से हटा दिया था और बनारस भेज दिया था।वजीफ़े -के लिए जो रकम दी गई थी उसमे अड़चन डालने के लिए उसे कलकत्ता बुलाया जा रहा था, जब इसकी शिकायत वकील से करने गया तो वकील उल्टा उसी को बुरा भला कहने लगा। वकील के ऐसे-व्यव्हार पर उसे गुस्सा आया और उसने वकील की हत्या कर दी। महीनों अंग्रेजों को जंगलों में दौड़ाता रहा परन्तु फिर भी उनके हाथ नहीं आया। अकेले ही अंग्रेजों के तंबू में कर्नल से मिलने चला गया और उससे दस कारतूस भी ले आया और जातेजाते अपना सही नाम भी बता दिया। इतने ज़ोखिम भरे कारनामों से सिद्ध होता है कि वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था।

*-निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए –

(i) मुठ्ठी भर आदमी मगर ये दमखम।

उत्तर कर्नल अपनी पूरी फ़ौज को ले कर वज़ीर अली का पीछा कर रह है और वज़ीर अली उनको सालों से - धोखा दे रहा है और इन्ही जंगलों में कहीं भटक रहा है परन्तु उसकी पकड़ में नहीं आ रहा है। वज़ीर अली के

साथ कुछ अपनी जान को जोख़िम में डालने वाले लोग हैं और ये इतने थोड़े से आदमी हैं परन्तु इनकी शक्ति और दृड़ता की कोई सीमा नहीं है।

(ii) गर्द तो ऐसी उड़ रही है जैसे की पूरा एक काफ़िला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

उत्तर- जब सिपाही ने कर्नल को कहा कि दूर से धूल उड़ती हुई दिखाई दे रही है। तो कर्नल ने तुरंत सिपाही - से कहा कि वह दूसरे सिपाहियों से तैयार रहने के लिए कहे। लेफ्टिनेंट खिड़की से बाहर देखने में व्यस्त था और कहने लगा धूल तो ऐसी उड़ रही है जैसे कि एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने वाले यात्रियों का समूह आ रहा हो। परन्तु दिखाई तो एक ही घुड़सवार दे रहा है। कर्नल भी खड़की के पास गया और देख कर बोला हाँ एक ही घुड़सवार लग रहा है जो तेज़ी से घोड़े को दौड़ा कर चला आ रहा है।

व्याकरण:-

रस का अर्थ:-

रस का शाब्दिक अर्थ है 'आनन्द'। काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे 'रस' कहा जाता है।रस का सम्बन्ध 'सृ' धातु से माना गया है। जिसका अर्थ है - जो बहता है, अर्थात जो भाव रूप में हृदय में बहता है उसी को रस कहते है।

रस को 'काव्य की आत्मा' या 'प्राण तत्व' माना जाता है।

1	श्रृंगार	रति
2	हास्य	हास
3	करुण	शोक
4	रौद्र	क्रोध
5	वीर	उत्साह
6	भयानक	भय
7	वीभत्स	जुगुप्सा

8	अद्भुत	विस्मय
9	शांत	निर्वेद
10	वात्सल्य	वत्सलता
11	भक्ति रस	अनुराग

रस के ग्यारह भेद होते है- (1) शृंगार रस (2) हास्य रस (3) करूण रस (4) रौद्र रस (5) वीर रस (6) भयानक रस (7) बीभत्स रस (8) अदभुत रस (9) शान्त रस (10) वत्सल रस (11) भक्ति रस ।

श्रृंगार रस

नायक नायिका के सौंदर्य तथा प्रेम संबंधी वर्णन को श्रंगार रस कहते हैं श्रृंगार रस को रसराज या रसपति कहा गया है। इसका स्थाई भाव रति होता है नायक और नायिका के मन में संस्कार रूप में स्थित रति या प्रेम जब रस कि अवस्था में पहुँच जाता है तो वह श्रंगार रस कहलाता है इसके अंतर्गत सौन्दर्य, प्रकृति, सुन्दर वन, वसंत ऋतु, पक्षियों का चहचहाना आदि के बारे में वर्णन किया जाता है। श्रृंगार रस – इसका स्थाई भाव रति है

उदाहरण -
कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात,

भरे भौन में करत है, नैननु ही सौ बात

श्रंगार के दो भेद होते हैं

संयोग श्रृंगार

जब नायक नायिका के परस्पर मिलन, स्पर्श, आलिगंन, वार्तालाप आदि का वर्णन होता है, तब संयोग शृंगार रस होता है।

उदाहरण -
बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नहि जाय।

वियोग श्रृंगार

जहाँ पर नायक-नायिका का परस्पर प्रबल प्रेम हो लेकिन मिलन न हो अर्थात् नायक – नायिका के वियोग का वर्णन हो वहाँ वियोग रस होता है। वियोग का स्थायी भाव भी 'रति' होता है।

जैसे

निसिदिन बरसत नयन हमारे,

सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे॥

हास्य रस

हास्य रस मनोरंजक है। हास्य रस नव रसों के अन्तर्गत स्वभावतसबसे अधिक सुखात्मक रस प्रतीत होता : है। हास्य रस का स्थायी भाव हास है। इसके अंतर्गत वेशभूषा, वाणी आदि कि विकृति को देखकर मन में जो प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है, उससे हास की उत्पत्ति होती है इसे ही हास्य रस कहते हैं।

हास्य दो प्रकार का होता है आत्मस्थ और परस्त :-

आत्मस्थ हास्य केवल हास्य के विषय को देखने मात्र से उत्पन्न होता है ,जबकि परस्त हास्य दूसरों को हँसते हुए देखने से प्रकट होता है।

उदाहरण -
बुरे समय को देख कर गंजे तू क्यों रोय।
किसी भी हालत में तेरा बाल न बाँका होय।

नया उदाहरण-

मैं ऐसा महावीर हूं,

पापड़ तोड़ सकता हूँ।

अगर गुस्सा आ जाए,

तो कागज को मरोड़ सकता हूँ।।

करुण रस

इसका स्थायी भाव शोक होता है। इस रस में किसी अपने का विनाश या अपने का वियोग, द्रव्यनाश एवं प्रेमी से सदैव विछुड़ जाने या दूर चले जाने से जो दुःख या वेदना उत्पन्न होती है उसे करुण रस कहते हैं ।यधपि वियोग श्रंगार रस में भी दुःख का अनुभव होता है लेकिन वहाँ पर दूर जाने वाले से पुनः मिलन कि आशा बंधी रहती है।

अर्थात् जहाँ पर पुनः मिलने कि आशा समाप्त हो जाती है करुण रस कहलाता है। इसमें निःश्वास, छाती पीटना, रोना, भूमि पर गिरना आदि का भाव व्यक्त होता है।

या किसी प्रिय व्यक्ति के चिर विरह या मरण से जो शोक उत्पन्न होता है उसे करुण रस कहते है।

उदाहरण -

रही खरकती हाय शूल-सी, पीड़ा उर में दशरथ के।
ग्लानि, त्रास, वेदना - विमण्डित, शाप कथा वे कह न सके।।

वीर रस

जब किसी रचना या वाक्य आदि से वीरता जैसे स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है, तो उसे वीर रस कहा जाता है। इस रस के अंतर्गत जब युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए मन में जो उत्साह की भावना विकसित होती है उसे ही वीर रस कहते हैं। इसमें शत्रु पर विजय प्राप्त करने, यश प्राप्त करने आदि प्रकट होती है इसका स्थायी भाव उत्साह होता है।

सामान्यतरौद्र एवं वीर रसों की पहचान में कठिनाई होती है। इसका कारण यह है कि दोनों के उपादान : कभी रौद्रता म-जुलते हैं। कभी-दूसरे से मिलते - बहुधा एकें वीरत्व तथा वीरता में रौद्रवत का आभास मिलता है,लेकिन रौद्र रस के स्थायी भाव क्रोध तथा वीर रस के स्थायी भाव उत्साह में अन्तर स्पष्ट है।

उदाहरण -

बुंदेले हर बोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।।

आद्याचार्य भरतमुनि ने वीर रस के तीन प्रकार बताये हैं –

दानवीर, धर्मवीर, युद्धवीर ।

- युद्धवीर

युद्धवीर का आलम्बन शत्रु, उद्दीपन शत्रु के पराक्रम इत्यादि, अनुभाव गर्वसूचक उक्तियाँ, रोमांच इत्यादि तथा संचारी धृति, स्मृति, गर्व, तर्क इत्यादि होते हैं।

- दानवीर

दानवीर के आलम्बन तीर्थ, याचक, पर्व, दानपात्र इत्यादि तथा उद्दीपन अन्य दाताओं के दान, दानपात्र द्वारा की गई प्रशंसा इत्यादि होते हैं।

- धर्मवीर

धर्मवीर में वेद शास्त्र के वचनों एवं सिद्धान्तों पर श्रद्धा तथा विश्वास आलम्बन, उनके उपदेशों और शिक्षाओं का श्रवणमनन इत्यादि उद्दीप-न, तदनुकूल आचरण अनुभाव तथा धृति, क्षमा आदि धर्म के दस लक्षण संचारी भाव होते हैं। धर्मधारण एवं धर्माचरण के उत्साह की पुष्टि इस रस में होती है।

रौद्र रस

इसका स्थायी भाव क्रोध होता है। जब किसी एक पक्ष या व्यक्ति द्वारा दुसरे पक्ष या दुसरे व्यक्ति का अपमान करने अथवा अपने गुरुजन आदि कि निन्दा से जो क्रोध उत्पन्न होता है उसे रौद्र रस कहते हैं।इसमें क्रोध के कारण मुख लाल हो जाना, दाँत पिसना, शास्त्र चलाना, भौहे चढ़ाना आदि के भाव उत्पन्न होते हैं।

काव्यगत रसों में रौद्र रस का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में शृंगार, रौद्र, वीर तथा वीभत्स, इन चार रसों को ही प्रधान माना है, अतः इन्हीं से अन्य रसों की उत्पत्ति बतायी है।

उदाहरण -

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।

सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥

संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।

करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥

अद्भुत रस

जब ब्यक्ति के मन में विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर जो विस्मय आदि के भाव उत्पन्न होते हैं उसे ही अदभुत रस कहा जाता है इसके अन्दर रोमांच, औंसू आना, काँपना, गद्गद होना, आँखे फाड़कर देखना आदि के भाव व्यक्त होते हैं। इसका स्थायी भाव आश्चर्य होता है।

उदाहरण -

देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया।

क्षणभर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया॥

भयानक रस

जब किसी भयानक या बुरे व्यक्ति या वस्तु को देखने या उससे सम्बंधित वर्णन करने या किसी दुःखद घटना का स्मरण करने से मन में जो व्याकुलता अर्थात परेशानी उत्पन्न होती है उसे भय कहते हैं उस भय के उत्पन्न होने से जिस रस कि उत्पत्ति होती है उसे भयानक रस कहते हैं इसके अंतर्गत कम्पन, पसीना छूटना, मुँह सूखना, चिन्ता आदि के भाव उत्पन्न होते हैं। इसका स्थायी भाव भय होता है।

उदाहरण -
अखिल यौवन के रंग उभार, हड्डियों के हिलाते कंकाल॥

कचो के चिकने काले, व्याल, केंचुली, काँस, सिबार ॥

उदाहरण -
एक ओर अजगर हिं लखि, एक ओर मृगराय॥

विकल बटोही बीच ही, पद्यो मूर्च्छा खाय॥

भयानक रस के दो भेद हैं-

i.स्वनिष्ठ

ii.परनिष्ठ

स्वनिष्ठ भयानक वहाँ होता है, जहाँ भय का आलम्बन स्वयं आश्रय में रहता है और परनिष्ठ भयानक वहाँ होता है, जहाँ भय का आलम्बन आश्रय में वर्तमान न होकर उससे बाहर, पृथक् होता है, अर्थात् आश्रय स्वयं अपने किये अपराध से ही डरता है।

बीभत्स रस

इसका स्थायी भाव जुगुप्सा होता है । घृणित वस्तुओं, घृणित चीजो या घृणित व्यक्ति को देखकर या उनके संबंध में विचार करके या उनके सम्बन्ध में सुनकर मन में उत्पन्न होने वाली घृणा या ग्लानि ही वीभत्स रस कि पुष्टि करती है दुसरे शब्दों में वीभत्स रस के लिए घृणा और जुगुप्सा का होना आवश्यक होता है।

वीभत्स रस काव्य में मान्य नव रसों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी स्थिति दुखात्मक रसों में : मानी जाती है। इसके परिणामस्वरूप घृणा, जुगुप्सा उत्पन्न होती है।इस दृष्टि से करुण, भयानक तथा रौद्र, ये तीन रस इसके सहयोगी या सहचर सिद्ध होते हैं। शान्त रस से भी इसकी निकटता मान्य है, क्योंकि बहुधा बीभत्सता का दर्शन वैराग्य की प्रेरणा देता है और अन्ततशान्त रस के स्थायी भाव शम का पोषण करता है। :

साहित्य रचना में इस रस का प्रयोग बहुत कम ही होता है। तुलसीदास ने रामचरित मानस के लंकाकांड में युद्ध के दृश्यों में कई जगह इस रस का प्रयोग किया है। उदाहरणमेघनाथ माया के प्रयोग से वानर सेना को डराने - के लिए कई वीभत्स कृत्य करने लगता है, जिसका वर्णन करते हुए तुलसीदास जी लिखते है-

'विष्टा पूय रुधिर कच हाडा

बरषइ कबहुं उपल बहु छाडा'

(वह कभी विष्ठा, खून, बाल और हड्डियां बरसाता था और कभी बहुत सारे पत्थर फेंकने लगता था।)

उदाहरण -

आँखे निकाल उड़ जाते, क्षण भर उड़ कर आ जाते
शव जीभ खींचकर कौवे, चुभला-चभला कर खाते

भोजन में श्वान लगे मुरदे थे भू पर लेटे
खा माँस चाट लेते थे, चटनी सैम बहते बहते बेटे

शान्त रस

मोक्ष और आध्यात्म की भावना से जिस रस की उत्पत्ति होती है, उसको शान्त रस नाम देना सम्भाव्य है। इस रस में तत्व ज्ञान कि प्राप्ति अथवा संसार से वैराग्य होने पर, परमात्मा के वास्तविक रूप का ज्ञान होने पर मन को जो शान्ति मिलती है। वहाँ शान्त रस कि उत्पत्ति होती है जहाँ न दुःख होता है, न द्वेष होता है। मन सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाता है मनुष्य वैराग्य प्राप्त कर लेता है शान्त रस कहा जाता है। इसका स्थायी भाव निर्वेद होता है। (उदासीनता)

शान्त रस साहित्य में प्रसिद्ध नौ रसों में अन्तिम रस माना जाता है "।ःशान्तोऽपि नवमो रस" - इसका कारण यह है कि भरतमुनि के में 'नाट्यशास्त्र', जो रस विवेचन का आदि स्रोत है, नाट्य रसों के रूप में केवल आठ रसों का ही वर्णन मिलता है।

उदाहरण -

जब मै था तब हरि नाहिं अब हरि है मै नाहिं
सब अँधियारा मिट गया जब दीपक देख्या माहिं

वत्सल रस

इसका स्थायी भाव वात्सल्यता होता है। (अनुराग) माता का पुत्र के प्रति प्रेम, बड़ों का बच्चों के प्रति प्रेम, गुरुओं का शिष्य के प्रति प्रेम, बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति प्रेम आदि का भाव स्नेह कहलाता है यही स्नेह का भाव परिपुष्ट होकर वात्सल्य रस कहलाता है।

उदाहरण -

बाल दसा सुख निरखि जसोदा, पुनि पुनि नन्द बुलवाति
अंचरा-तर लै ढ़ाकी सूर, प्रभु कौ दूध पियावति

भक्ति रस

इसका स्थायी भाव देव रति है। इस रस में ईश्वर कि अनुरक्ति और अनुराग का वर्णन होता है अर्थात इस रस में ईश्वर के प्रति प्रेम का वर्णन किया जाता है।

उदाहरण -

अँसुवन जल सिंची-सिंची प्रेम-बेलि बोई
मीरा की लगन लागी, होनी हो सो होई

वाक्य:-

वर्णों के जोड़ से शब्द बनते है –सही शब्दों के जोड़ से वाक्य बन्ता है|

वाक्य के अंग (Vakya ke Ang)

(1) उद्देश्य

(2) विधेय

(1) उद्देश्य →

जैसे → वैशाली कपड़े धो रही थी |

दमयंती ने खाना बनाया |

→ वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं |

→ उद्देश्य के अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार आता है |

(2) विधेय →

जैसे → रोहन झगड़ रहा था |

राधा सितार बजा रही है |

वाक्य के भेद)Vakya ke bhed)

(1) अर्थ के आधार पर (Arth ke aadhar par vakya ke bhed)

(2) रचना के आधार पर (Rachna ke aadhar par vakya ke bhed)

(1) विधानवाचक वाक्य

(2) निषेधवाचक वाक्य

(3) विस्मयवाचक वाक्य

(4) संदेहवाचक वाक्य

(5) आज्ञावाचक वाक्य

(6) संकेतवाचक वाक्य

(7) इच्छावाचक वाक्य

(8) प्रश्नवाचक वाक्य

(1) विधानवाचक वाक्य→

→ जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के होने या करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते है |

जैसे → वेदांत विद्यालय जा रहा है |

→ बलवीर ने भाषण दिया |

(2) निषेधवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में क्रिया के करने या होने का निषेध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → मैं बाजार नहीं जाऊँगा |

→ मोहन घूमने नहीं जा रहा |

(3) आज्ञावाचक वाक्य→

जिस वाक्य से आज्ञा, अनुमति, विनय या अनुरोध का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए |

तुम अंदर जाकर पढ़ाई करो

(4) प्रश्नवाचक वाक्य→

जिन वाक्यों द्वारा प्रश्न करने का भाव प्रकट होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → राहुल को किसने डाँट दिया ?

आपको किससे मिलना है ?

(5) इच्छावाचक वाक्य→

जिस वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, कामना, शुभकामना आदि का भाव प्रकट होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) आपकी यात्रा मंगलमय हो |

(2) ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे |

(6) संदेहवाचक वाक्य→

ऐसे वाक्य जिनसे कार्य के होने या न होने के प्रति संदेह या संभावना प्रकट होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) शायद कल वर्षा हो जाए |

(2) लगता है आज बारिश होगी |

(7) संकेतवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) पानी न बरसता, तो धान सूख जाता |

(2) यदि पेड़ लगाएँगे, तो वायु शुद्ध होगी |

(8) विस्मयवाचक वाक्य →

जिस वाक्य से हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, आदि भावों का बोध होता है, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं |जैसे → (1) बाप रे ! इतना मोटा चूहा |

(2) वाह ! कितनी सुंदर फुलवारी है |

2.वाक्य के प्रकार:-

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्रित वाक्य
4. (1) सरल वाक्य →

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं |

जैसे → राम ने रावण को मारा

उद्देश्य = राम ने

विधेय = रावण को मारा |

अमित खाना खा रहा है |

उद्देश्य = अमित

विधेय = खाना खा रहा है |

(2) संयुक्त वाक्य →

जिस वाक्य में दो-या-दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक या समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं |

उदाहरण

(1) हमने फिल्म का टिकट खरीदा और सिनेमा हॉल चले गए |

(2) पिताजी बाजार गए और हमारे लिए मिठाई लाए |

(3) मिश्रित वाक्य →

जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जुड़े हो कि उनमें एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रित उपवाक्य हों | उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं |

जैसे → वेदांत ने कहाँ कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

प्रधान उपवाक्य = वेदांत ने कहाँ

आश्रित उपवाक्य = कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

(2) वे सफल होते हैं जो परिश्रम करते है |

प्रधान उपवाक्य = वे सफल होते हैं

आश्रित उपवाक्य = जो परिश्रम करते है |

रचना के आधार पर वाक्यों में परिवर्तन

.सरल वाक्य.

चाय या कॉफी में से कोई पी लेंगे |

माँ ने गोलू को डाँटकर सुलाया |

.संयुक्त वाक्य.

चाय पी लेंगे या कॉफी पी लेंगे

माँ ने गोलू को डाँटा और सुला दिया

.सरल वाक्य.

लापरवाह मजदूर छत से गिर गया |

ईमानदार व्यक्ति का सभी आदर करते हैं |

.मिश्र वाक्य.

जो मज़दूर लापरवाह था, वह छत से गिर गया |

जो व्यक्ति ईमानदार होता है, सभी उसका आदर करते हैं |

.संयुक्त वाक्य.

शालू आई और पढ़ने लगी |

घबराओ मत और कविता सुनाओ |

.सरल वाक्य.

शालू आकर पढ़ने लगी |

बिना घबराए कविता सुनाओ |

(संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य)

.संयुक्त वाक्य.

घंटी बज गई और बच्चे कक्षा में जाने लगे |

राधा आई तो रेखा चली गई |

.मिश्र वाक्य.

जब घंटी बजी तब बच्चे कक्षा में जाने लगे |

जब राधा आई तब रेखा चली गई |

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य

(1) कक्षा में अध्यापक आते ही सभी शांत हो गए | (सरल वाक्य)
कक्षा में अध्यापक आए और सभी शांत हो गए | (संयुक्त वाक्य)
जैसे ही कक्षा में अध्यापक आए वैसे ही सब शांत हो गए| (मिश्र वाक्य)

(2) माँ के आते ही दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (सरल वाक्य)
माँ आई और दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (संयुक्त वाक्य)
ज्यों ही माँ आई दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (मिश्र वाक्य)

*-सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन:-

(1)सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।
संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

(2)सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।
संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(3)सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।
संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

(4)सरल वाक्य- पैसा साध्य न होकर साधन है।
संयुक्त वाक्य- पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है।

(5)सरल वाक्य- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता है।
संयुक्त वाक्य- उसमें गुण थे, इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

(6)सरल वाक्य- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ।
संयुक्त वाक्य- न एक काम पूरा हुआ न दूसरा।

(7) सरल वाक्य- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।
संयुक्त वाक्य- वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

(8) सरल वाक्य- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।
संयुक्त वाक्य- परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।

(9) सरल वाक्य- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा।
संयुक्त वाक्य- रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा।

(10) सरल वाक्य- वह खाना खाकर सो गया।
संयुक्त वाक्य- उसने खाना खाया और सो गया।

(11) सरल वाक्य- उसने गलत काम करके अपयश कमाया।
संयुक्त वाक्य- उसने गलत काम किया और अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।
सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

(2)संयुक्त वाक्य- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।
सरल वाक्य- जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

(3)संयुक्त वाक्य- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते।
सरल वाक्य- लोग उसे धनी नहीं समझते।

(4)संयुक्त वाक्य- वह अमीर है फिर भी सुखी नहीं है।
सरल वाक्य- वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है।

(5)संयुक्त वाक्य- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे।
सरल वाक्य- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(6)संयुक्त वाक्य- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया।
सरल वाक्य- भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा।
मिश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।

(2)सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।
मिश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

(3)सरल वाक्य- लोकप्रिय कवि का सम्मान सभी करते हैं।
मिश्र वाक्य- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

(4)सरल वाक्य- लड़के ने अपना दोष मान लिया।
मिश्र वाक्य- लड़के ने माना कि दोष उसका है।

(5)सरल वाक्य- राम मुझसे घर आने को कहता है।
मिश्र वाक्य- राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ।

(6)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलूँ।

(7)सरल वाक्य- आप अपनी समस्या बताएँ।
मिश्र वाक्य- आप बताएँ कि आपकी समस्या क्या है ?

(8)सरल वाक्य- मुझे पुरस्कार मिलने की आशा है।
मिश्र वाक्य- आशा है कि मुझे पुरस्कार मिलेगा।

(9)सरल वाक्य- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है।
मिश्र वाक्य- महेश इस योग्य नहीं है कि सेना में भर्ती हो सके।

(10)सरल वाक्य- राम के आने पर मोहन जाएगा।
मिश्र वाक्य- जब राम जाएगा तब मोहन आएगा।

(11)सरल वाक्य- मेरे बैठने की जगह कहाँ है ?
मिश्र वाक्य- वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ ?

(12)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ व्यापार करूँ।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषित किया।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।
सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।

(3)मिश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।
सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।

(4)मिश्र वाक्य- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा।
सरल वाक्य- मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा।

(5)मिश्र वाक्य- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।
सरल वाक्य- पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा।

(6)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष बताया।

(7)मिश्र वाक्य- यह निश्चित नहीं है कि वह कब आएगा?
सरल वाक्य- उसके आने का समय निश्चित नहीं है।

(8)मिश्र वाक्य- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।
सरल वाक्य- तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।

(9)मिश्र वाक्य- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है।
सरल वाक्य- राम और श्याम साथ ही रहते हैं।

(10)मिश्र वाक्य- आशा है कि वह साफ बच जाएगा।
सरल वाक्य- उसके साफ बच जाने की आशा है।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1) संयुक्त वाक्य- सूर्य निकला और कमल खिल गए।
मिश्र वाक्य- जब सूर्य निकला, तो कमल खिल गए।

(2) संयुक्त वाक्य- छुट्टी की घंटी बजी और सब छात्र भाग गए।
मिश्र वाक्य- जब छुट्टी की घंटी बजी, तब सब छात्र भाग गए।

(3)संयुक्त वाक्य- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।
मिश्र वाक्य- यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा।

(4)संयुक्त वाक्य- इस समय सर्दी है इसलिए कोट पहन लो।
मिश्र वाक्य- क्योंकि इस समय सर्दी है, इसलिए कोट पहन लो।

(5)संयुक्त वाक्य- वह मरणासन्न था, इसलिए मैंने उसे क्षमा कर दिया।
मिश्र वाक्य- मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह मरणासन्न था।

(6)संयुक्त वाक्य- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है।
मिश्र वाक्य- भले ही वक्त निकल जाता है, फिर भी बात याद रहती है।

(7)संयुक्त वाक्य- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी।
मिश्र वाक्य- यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी।

(8)संयुक्त वाक्य- इसकी तलाशी लो और घड़ी मिल जाएगी।
मिश्र वाक्य- यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मिल जाएगी।

(9)संयुक्त वाक्य- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा।
मिश्र वाक्य- यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था।
संयुक्त वाक्य- वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे वह पुस्तक मिल गई है जो खो गई थी।
संयुक्त वाक्य- वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मिल गई है।

(3)मिश्र वाक्य- जैसे ही उसे तार मिला वह घर से चल पड़ा।
संयुक्त वाक्य- उसे तार मिला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा।

(4)मिश्र वाक्य- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो।
संयुक्त वाक्य- काम समाप्त करो और जाओ।

(5)मिश्र वाक्य- मुझे विश्वास है कि दोष तुम्हारा है।
संयुक्त वाक्य- दोष तुम्हारा है और इसका मुझे विश्वास है।

(6)मिश्र वाक्य- आश्चर्य है कि वह हार गया।
संयुक्त वाक्य- वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है।

(7)मिश्र वाक्य- जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
संयुक्त वाक्य- जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

‘शब्द , पद, पदबंध‘ :-

शब्द:-
शब्द दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बने उस समूह को कहते हैं जिसका कोई निर्दिष्ट अर्थ हो, जैसे – पानी
यह शब्द चार वर्णों के मेल से बना है- प्+आ+न्+ई = पानी
पानी शब्द सुनते या देखते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे तरल द्रव्य का चित्र उभरता है जिसे पीकर हम अपनी प्यास बुझाते हैं।
माता –म+आ+त+आ=

शब्द और अर्थ का संबंध:-

शब्द और अर्थ का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध। जिन शब्दों के अर्थ न हो उसे शब्द की श्रेणी में रखा ही नहीं जा सकता है, जैसे- नीपा ये शब्द भी चार वर्णों न्+ई+प्+आ के संयोग से बना है परंतु इसका कोई अर्थ नहीं अर्थात् इसे सार्थक शब्द नहीं कहा जाएगा।

शब्द के अर्थ का बोध

शब्द के अर्थ का बोध हमें दो प्रकार से होता है पहला आत्म-अनुभव और दूसरा पर-अनुभव से।

आत्म-अनुभव – जब हम स्वयं किसी चीज़ का अनुभव करते हैं जैसे – 'चीनी मीठी होती है' में मीठी शब्द के अर्थ का बोध हमें स्वयं चीनी चखने से हो जाता है। ठीक इसी प्रकार पानी, गर्मी, धूप इत्यादि

पर-अनुभव - अर्थ के बोध का अनेक क्षेत्र ऐसा भी होता है जहाँ हमारी पहुँच नहीं होती और हमें अर्थ बोध के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जैसे हममें से बहुत से लोगों ने जहर नहीं देखा होगा लेकिन हमने दूसरों से यह सुन रखा है कि इसको खाने से मौत हो जाती है। ठीक इसी प्रकार – आत्मा, ईश्वर, मोक्ष इत्यादि शब्दों के अर्थ बोध के लिए हमें दूसरों के अनुभव की ज़रूरत पड़ती है।

पद:-

पद- शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ जाते हैं तब वे पद कहलाते हैं और ये पद वाक्य के आंशिक भाव को प्रकट करते हैं।

यहाँ आपके लिए यह जान लेना आवश्यक है कि व्याकरणिक इकाइयाँ होती क्या है?

संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, क्रिया,काल आदि व्याकरणिक बिन्दुओं को ही व्याकरणिक इकाइयाँ कहते हैं।

माँ कब से खाना बना रहीं हैं|

माँ –एक वचन,स्त्रीलिंग,जातिवाचक

खाना -बहुवचन, जातिवाचक

कब से –काल

बना रहीं हैं- क्रिया ,वर्तमानकाल

उदाहरण के लिए एक शब्द है- 'राजा' अब हम इसे वाक्य में प्रयोग करेंगे।

<u>राजा</u> हरिश्चंद्र बहुत बड़े दानवीर थे।

यहाँ 'राजा' शब्द न रहकर पद में बदल चुका है क्योंकि एक तो यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह हरिश्चंद्र की विशेषता बता रहा है कि वे एक राजा थे।

दूसरा वाक्य

भारत के लगभग सभी <u>राजाओं</u> ने राजकुमारी संयुक्ता के स्वयंवर में भाग लिया।

यहाँ 'राजाओं' शब्द भी पद में बदल चुका है क्योंकि यहाँ भी यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह भारत के सभी राजाओं के बारे में बता रहा है।

इसे और स्पष्ट करने के लिए हमें यह जान लेना ज़रूरी है कि यह पद कौन-कौन से व्याकरणिक इकाइयों से अनुशासित हुआ है-

राजाओं – संज्ञा-जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, भाग लिया क्रिया का कर्त्ता
इस प्रक्रिया को पद परिचय कहते हैं।

पदबंध:-

पद से बड़ी इकाई को पदबंध कहते हैं या एकाधिक पद को पदबंध कहते हैं।
पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं –
संज्ञा पदबंध
सर्वनाम पदबंध
विशेषण पदबंध
क्रिया पदबंध
क्रियाविशेषण पदबंध
इन पाँचों पदबंधों पर हम एक एक करके विचार करेंगे

संज्ञा पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में संज्ञा का काम करे उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-
इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।
प्रश्न - कौन देशभक्त हैं?
उत्तर - इज़राइल के प्रत्येक नागरिक
आज बाज़ार मे सस्ते दामों में आम मिल रहे थे।
प्रश्न - सस्ते दामों में क्या मिल रहा था?
उत्तर – आम

सर्वनाम पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में सर्वनाम का काम करे उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-
काम करते-करते वह थक गया।
प्रश्न - काम करते-करते कौन थक गया?
उत्तर –वह
दूध में कुछ गिर गया है।
प्रश्न - दूध में क्या गिर गया है?
उत्तर – कुछ

विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में विशेषण काम करे उसे विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कैसे लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

प्रश्न - इस दुनिया में कैसे लोग बहुत कम हैं?

उत्तर – ईमानदार

मेहनत से जी चुराने वाले सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न – कैसे लोग सफल नहीं होते हैं?

उत्तर – मेहनत से जी चुराने वाले

क्रिया पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया काम करे उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। इसमें किसी कार्य के होने का बोध होता है जैसे-

बहुत देर हो गई है।

बच्चे परीक्षा दे रहे हैं।

क्रिया विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया विशेषण काम करे उसे क्रिया विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कि इसमें क्रिया की विशेषता का बोध होता है इसमें क्रिया के साथ कितना, कहाँ, कैसे और कब आदि लगाकर प्रश्न बनाए जाते हैं, जैसे-

बच्चा बहुत दूर चलते-चलते थक गया।

प्रश्न - बच्चा कितना चलते-चलते थक गया?

उत्तर - बहुत दूर

दो लड़के खिडकी से बाहर देख रहे हैं।

प्रश्न - दो लड़के कहाँ देख रहे हैं?

उत्तर - खिड़की से बाहर

गाड़ी बहुत तेज़ चल रही है।

प्रश्न - गाड़ी कैसे चल रही है?

उत्तर - बहुत तेज़

राजू के बड़े भाई परसों दिल्ली चले गए।

प्रश्न - राजू के बड़े भाई कब दिल्ली चले गए?

उत्तर - राजू के बड़े भाई परसों

इसके अतिरिक्त रेखांकित पदबंधों के अंतिम शब्द के आधार पर भी हम पदबंध का निर्धारण कर सकते हैं, जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

काम करते-करते वह थक गया।

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

बहुत देर हो गई है।

दो लडके खिडकी से बाहर देख रहे हैं।

----------((((((((((((((((((